यह है मंगलवार व्रत कथा

ॐ नमो भगवते हनुमते नमः।
बोलो पवनपुत्र हनुमान जी महाराज की जय।
भक्तों, एक समय की बात है। एक नगर में एक ब्राह्मण दंपति निवास करता था। दोनों पति-पत्नी बड़े ही प्रेम और सद्भाव से जीवन व्यतीत करते थे, परंतु संतान न होने के कारण उनका मन सदैव दुखी रहता था। अनेक वर्षों तक उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, यज्ञ-दान किए, किंतु उनकी मनोकामना पूर्ण नहीं हो रही थी।
एक दिन किसी पुण्यात्मा ने उन्हें उपाय बताया कि यदि वे प्रत्येक मंगलवार श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान हनुमान जी की पूजा और व्रत करें, तो अवश्य ही उनके कष्ट दूर होंगे। यह सुनकर ब्राह्मण दंपति के मन में आशा जागी।
उस दिन से ब्राह्मण प्रत्येक मंगलवार ठीक एक समय पर हनुमान जी की पूजा करने लगा और उनकी पत्नी पूरे विधि-विधान से व्रत रखने लगी। पूजा के बाद हनुमान जी को भोग लगाया जाता और फिर परिवार भोजन करता। समय बीतने लगा, भक्ति और निष्ठा दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई।
एक मंगलवार ऐसा आया जब किसी कारणवश ब्राह्मणी भोजन नहीं बना पाई और हनुमान जी को भोग नहीं लग सका। यह बात उसे भीतर तक पीड़ा देने लगी। उसी दिन उसने दृढ़ संकल्प लिया कि अगले मंगलवार वह किसी भी परिस्थिति में बिना भोग लगाए अन्न ग्रहण नहीं करेगी।
इस संकल्प के साथ वह छह दिनों तक निराहार रही। व्रत वाले दिन पूजा करते-करते वह मूर्छित होकर गिर पड़ी। भक्तों, यह सब पवनपुत्र हनुमान जी देख रहे थे। अपने भक्तों की ऐसी सच्ची भक्ति, त्याग और निष्ठा देखकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए।
हनुमान जी ने कृपा करके उस दंपति को पुत्र-रत्न का आशीर्वाद दिया और कहा:
“यह बालक तुम्हारा सहारा बनेगा और तुम्हारी सेवा करेगा।”
जब ब्राह्मणी को होश आया तो उसने अपने पास एक सुंदर बालक को देखा। उसकी आँखों से आनंद के आँसू बह निकले। उसने उस बालक का नाम मंगल रखा।
कुछ समय बाद ब्राह्मण घर लौटा। उसने शिशु के रोने की आवाज सुनी और आश्चर्य से पत्नी से पूछा:
“यह बालक किसका है?”
ब्राह्मणी ने विनम्र भाव से कहा—
“मेरे व्रत और भक्ति से प्रसन्न होकर हनुमान जी ने हमें यह संतान दी है।”
परंतु ब्राह्मण को इस पर विश्वास नहीं हुआ। एक दिन जब ब्राह्मणी घर पर नहीं थी, तो उसने अज्ञानवश उस बालक को कुएँ में डाल दिया।
जब ब्राह्मणी लौटी तो व्याकुल होकर बोली:
“मंगल कहाँ है?”
Shrihanumanchalisa.in
उसी क्षण पीछे से बालक की मधुर आवाज आई:
“माँ, मैं यहाँ हूँ।”
यह देखकर ब्राह्मण स्तब्ध रह गया। उसी रात उसे स्वप्न में भगवान हनुमान जी के दर्शन हुए। हनुमान जी ने कहा—
“यह संतान तुम्हारी ही है। यह मेरी कृपा से तुम्हें प्राप्त हुई है।”
यह सुनते ही ब्राह्मण की आँखें खुल गईं, उसका हृदय पश्चाताप और आनंद से भर गया। उसने अपने किए पर क्षमा माँगी और उस दिन से वह भी पूरे विश्वास के साथ हनुमान जी का व्रत रखने लगा।
भक्तों, तभी से यह मान्यता चली आ रही है कि जो भी श्रद्धा, निष्ठा और विश्वास के साथ भगवान हनुमान जी की पूजा और व्रत करता है, हनुमान जी उसकी हर सच्ची मनोकामना पूर्ण करते हैं। हनुमान जी को दया, करुणा और भक्त-वत्सलता का प्रतीक माना गया है।
इसी के साथ कथा पूर्ण होती है।
बोलो बजरंगबली की जय। 🙏